शनिवार

33 साल से देहरादून का विश्वास

14 जून 2025

- देहरादून
- वर्ष 33
- अंक 132
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94 email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

सेना को मिले 419 अधिकारी

●कंधों पर सजे सितारे तो छलक आए आंसू

विशेष संवाददाता

देहरादून। राजधानी देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी परिसर में आयोजित की गई पासिंग आउट परेड के संपन्न होने के साथ ही आईएमए के इतिहास में एक और स्वर्णिम पन्ना जुड़ गया जब 451 कैडिटों ने पासिंग परेड का हिस्सा बनते हुए देश की सुरक्षा की शपथ ली। पासिंग परेड के बाद परिजनों ने कंधों पर जब सितारे सजाए तो कई लोगों के लिए यह पल इतने भावुक एहसास के थे कि आंखों से आंसू छलक पड़े।

आज कड़ी सुरक्षा के बीच हुई पासिंग आउट परेड सुबह 6 बजे शुरू हुई। 156वें पासिंग आउट परेड की सलामी श्रीलंका के सेना प्रमुख लासांथा रोड्रिगो ने ली। उल्लेखनीय है कि लेफ्टिनेंट जनरल लासांथा ने खुद भी दिसंबर 1999 में आईएमए देहरादून से ही कमीशन प्राप्त किया था, जो आज संपन्न हुई पासिंग आउट परेड में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। आज की पासिंग आउट परेड में कुल 451 कैडिटो ने भाग लिया है जिसमें 419 भारतीय हैं तथा 32 कैडेट

❑देश सेवा के जज्बे को देखकर हुई गर्व की अनुभूति

मित्र राष्ट्रों के हैं। भारतीय सैन्य अकादमी ने अब तक देश को प्रशिक्षित सैन्य अधिकारी देने के साथ ही विश्व भर के मित्र राष्ट्रों को हजारों की संख्या में सैन्य अधिकारी दिए हैं। सेना में कमीशन पाने की सफलता और गर्व क्या होता है हर एक पासिंग आउट परेड में इसकी अनुभूतियों को देखा जा सकता है। ठीक उसी क्रम में आज भी पहले मार्च पास्ट, सलामी और परेड के दौरान इन जाबाजों का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिला। इसके बाद अपनी भावी पीढ़ी के स्वर्णिम भविष्य की तस्वीर को देखने और उसके साक्षी बनने आए परिजनों की खुशियां भी उनके चेहरे पर उसे वक्त साफ नजर आई जब वह अपने सपूतों के कंधों पर सितारे सजा रहे थे। अत्यंत ही भावनात्मक इन क्षणों में कई लोगों की आंखों में खुशियों के आंसू देखे गए। एक साल की कठिन और अत्यंत कड़ी ट्रेनिंग के बाद इस मुकाम तक पहुंच कर कैडिटों के चेहरे भी खुशी से चमक रहे थे। पासिंग आउट परेड की सुरक्षा के मद्देनजर कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए थे तथा मुख्य मार्ग से ट्रैफिक को भी डायवर्ट किया गया था।

दून वैली मेल

संपादकीय

इन मौतों का जिम्मेदार कौन?

वह जमाने अब लद चुके हैं जब किसी सरकारी ओहदे पर अधिकारी और मंत्री सरकारी संसाधनों का उपयोग सिर्फ सरकारी काम काज के लिए ही करते थे और किसी भी घटना दुर्घटना की जिम्मेवारी स्वयं लेते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया करते थे। जैसे सन 1956 में तत्कालीन रेल मंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने दे दिया था। उनके कार्यकाल में पहली बड़ी रेल दुर्घटना महमूद नगर में हुई जिसमें 112 लोगों की जान चली गई थी तब लाल बहादुर शास्त्री ने इस हादसे की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को अपना इस्तीफा सौंप दिया था। तब जवाहरलाल नेहरू ने उनका यह इस्तीफा यह कहते हुए मंजूर कर लिया गया था कि पद पर बैठे लोगों को उनकी जिम्मेदारी का एहसास होना तो जरूरी है ही साथ ही हमें इसकी नजीर भी पेश करनी होगी इसलिए उनका इस्तीफा स्वीकार है। लेकिन शायद अब अपनी नैतिक जिम्मेदारी और ईमानदारी का एहसास हमारे किसी नेता अथवा अधिकारी को नहीं रहा है। यही कारण है कि आज राजनीति और ब्यूरोक्रेसी से नैतिकता और जिम्मेवारी जैसे शब्दों का लोप हो चुका है। बीते दो दिन पूर्व अहमदाबाद में हुए एक बड़े हादसे में लगभग ढाई सौ लोगों की मौत हो गई तथा 50 के आसपास लोग जिंदगी और मौत की जंग लड़ रहे हैं। नेताओं द्वारा डिजिटल के इस युग में एक्स पर शोक संवेदना जताने वालों की बाढ़ आई हुई है। ऐसा लगता है कि यह सब घड़ियाली आंसू ही बहा रहे हैं या फिर इसलिए शोक संवेदनाएं दे रहे हैं कि कल कोई उनसे यह न कहे कि उन्हें मरने वालों से कुछ लेना-देना नहीं है उन्होंने दो शब्द संवेदना के भी नहीं कहे। इस घटना को लेकर बीते कल विपक्षी दलों के नेताओं के स्वर भी सुनाई दे रहे हैं जो प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री और उड्डयन मंत्री से इस्तीफा मांग रहे हैं। भले ही इस्तीफे की मांग करने वाले यह नेता भी अपनी राजनीति चमकाने के लिए ही जिम्मेदार पदों पर बैठे इन जिम्मेवार लोगों से इस्तीफे की मांग कर रहे हों लेकिन अहम सवाल यह है कि देश भर में होने वाली तमाम हृदय विदारक घटनाओं पर देशवासियों का खून खौले या उन्हें गुस्सा आए हमारे नेताओं और अधिकारियों को कुछ क्यों नहीं होता है। क्या उसके चाल चरित्र और जीवन से नैतिकता जैसी चीज बिल्कुल समाप्त हो चुकी है? अभी पहलगाम में जो आतंकी हमला हुआ तथा इससे पूर्व पुलवामा में जो कुछ भी हुआ था वह कितना दुखद था इसका एहसास एक आदमी को हिला कर रख देता है लेकिन सत्ता में बैठे लोगों को इसका रत्ती भर फर्क नहीं पड़ा अगर पड़ा होता तो सिंदूर पर सियासत नहीं हो रही होती। देश का एक राज्य मणिपुर जहां से मानवता को शर्मसार करने वाली तमाम तस्वीरें आई लेकिन किसी को भी इन्हें देखकर शर्म नहीं आई। अगर आई होती तो किसी न किसी ने तो उसकी नैतिक जिम्मेदारी ली होती और अपने पद से इस्तीफा देने का साहस दिखाया होता। यह घटनाएं तो महज एक बानगी भर है आये दिन देश के किसी भी हिस्से से ऐसी घटना दुर्घटनाओं की खबरें आती रहती हैं। लेकिन देश में जो कुछ चल रहा है या हो रहा है उसे लेकर किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। आज जो हुआ कल भुला दिया जाता है और यूं ही देश रामभरोंसे चलाया जा रहा है और चलता रहेगा।

एसी का सही उपयोग

जैसा कि सभी को पता है कि भीषण गर्मी शुरू हो चुकी है और घर घर एयर कंडीशनर चलने लगे हैं। अधिकतर लोगों की आदत है कि वह अपने एसी को 20-22 डिग्री पर चलाते हैं और ठंड लगने पर कंबल आदि ओढ़ लेते हैं। इससे दोहरा नुकसान होता है। आईये जानते हैं कैसे? क्या आपको पता है कि हमारे शरीर का तापमान 35 डिग्री सेल्शियस होता है। शरीर 22 डिग्री से 39 डिग्री तक का तापमान सह सकता है। इसे कहते हैं ह्यूमन बॉडी टेम्परेचर टॉलरेंस। तापमान के इससे कम या अधिक होने पर शरीर प्रतिक्रिया करने लगता है जैसे छीकें आदि।

जब आप 20-21 डिग्री पर एसी चलाते हैं तो यह तापमान शरीर के सामान्य तापमान से कम है और इससे शरीर में ह्यूपोथेरमिआ नाम का एक प्रोसेस शुरू हो जाता है जो रक्त प्रवाह को प्रभावित करता है और शरीर के कुछ अंगों में रक्त ठीक प्रकार से नहीं पहुंच पाता। इसके लॉग टर्म में बहुत नुकसान होते हैं जैसे गठिया आदि बीमारियां। अधिकतर समय एसी में बिताने से पसीना नहीं आता जिससे शरीर के टोक्सीन बाहर नहीं निकल पाते और लॉग टर्म में इससे भी कई बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसमें क्या बुद्धिमानी है कि एसी को पहले 20-21 पर चलाएं और फिर चादर ओढ़ लें। इससे बेहतर है कि एसी को 25+ डिग्री पर चलाएं और पंखा भी चला लें। 5% इससे बिजली भी कम खर्च होगी और आपका शरीर का तापमान भी सीमा में रहेगा और उसे कोई नुकसान भी नहीं होगा।

इसका एक और फायदा है कि जब एसी कम बिजली खर्च करेगा तो बिजलीघरों पर भी दवाब कम होगा और अंततः ग्लोबल वार्मिंग में भी कमी आएगी। मान लीजिए एसी को 26 पर चला कर आप लगभग 5 यूनिट बिजली प्रति एसी प्रति रात्रि बचाते हैं और यदि ऐसा 10 लाख घरों में होता है तो आप 50 लाख यूनिट बिजली प्रतिदिन बचाते हैं। प्रादेशिक स्तर पर यह बचत करोड़ों यूनिट प्रतिदिन की हो सकती है। कृप्या विचार करें और अपने एसी को 25 डिग्री से नीचे बिल्कुल न चलाएं। अपने शरीर और वातावरण को स्वस्थ रखें।

साभार: सोशल मीडिया

मुख्यमंत्री ने आईटीबीपी के हिमाद्री ट्रैकिंग अभियान को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल के हिमाद्री ट्रैकिंग अभियान-2025 को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

आज यहां मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय से भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल (आईटीबीपी) के हिमाद्री ट्रैकिंग अभियान-2025 को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने अहमदाबाद विमान दुर्घटना में दिवंगत हुए सभी यात्रियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की। विमान दुर्घटना में दिवंगतों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर आईटीबीपी के वीर जवानों, अधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह अभियान न केवल साहस और संकल्प का प्रतीक है, बल्कि सीमावर्ती क्षेत्रों की सामरिक सुरक्षा और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि आईटीबीपी का 45 सदस्यीय दल इस अभियान के अंतर्गत उत्तराखंड से हिमाचल प्रदेश होते हुए लद्दाख तक लगभग 1032 किलोमीटर की कठिन यात्रा करेगा। यह अभियान न केवल सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों की निगरानी सुनिश्चित करेगा, बल्कि धार्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों की पहचान तथा स्थानीय परंपराओं को प्रोत्साहित करने में भी सहायक सिद्ध होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह गर्व का विषय है कि वीरभूमि उत्तराखंड से बड़ी संख्या में सेना और अर्धसैनिक बलों में सेवा करने वाले वीर जवान देश की रक्षा में योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल, वर्ष 1962 से लगातार देश की सीमाओं की रक्षा के साथ-साथ आपदाओं के समय भी राहत व बचाव कार्यों में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सशस्त्र बलों के सशक्तिकरण के लिए उठाए गए कदमों का उल्लेख करते हुए कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से भारत ने एक बार फिर साबित किया कि देश की सुरक्षा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता अटल है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार सैनिकों और उनके परिजनों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। शहीदों के परिजनों को दी जाने वाली अनुग्रह राशि को 10 लाख से बढ़ाकर 50 लाख किया गया है, वीरता पुरस्कार प्राप्त सैनिकों को दी जाने वाली धनराशि में वृद्धि की गई है, और बलिदानियों के आश्रितों को सरकारी नौकरी में समायोजन की अवधि को दो वर्ष से बढ़ाकर पाँच वर्ष कर दिया गया है। वीरता पुरस्कार प्राप्त सैनिकों और पूर्व सैनिकों को सरकारी बसों में निशुल्क यात्रा, संपत्ति की खरीद पर स्टाम्प ड्यूटी में छूट, और बेटियों के विवाह हेतु विशेष अनुदान जैसी योजनाएँ भी चलाई जा रही हैं। आईजी आईडीबीपी श्री संजय गुंज्याल ने कहा कि हिमाद्री ट्रैकिंग अभियान के तहत आईटीबीपी का दल कुल 1032 किमी की दूरी तय करेगी। इसमें दल 27 घाटियों और 27 दर्रों को पार करेगा। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के साथ ही वाइब्रेंट विलेज क्षेत्रों में एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि इस ट्रेकिंग रूट में कुल 84 वाइब्रेंट विलेज आयेंगे। इस दौरान अभियान दल द्वारा स्थानीय लोगों को 3.5 लाख फलदार पौधे भी वितरित किए जाएंगे। इस अवसर पर मुख्य सचिव आनंद बर्द्धन, सचिव गृह शैलेश बगौली, डीजीपी दीपम सेठ, आईजी आईटीबीपी गिरीश चन्द्र उपाध्याय एवं आईटीबीपी के जवान मौजूद थे।

एनसीसी कैडेट्स ने किया 223 यूनिट रक्तदान

संवाददाता

रूडकी। विश्व रक्तदान दिवस पर एनसीसी कैडेट्स ने 223 यूनिट रक्तदान किया।

आज विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर 84 उत्तराखंड बटालियन एनसीसी, रुड़की के अंतर्गत आने वाले विश्वविद्यालय व महाविद्यालयो में अध्यनरत अट्ठारह वर्ष से अधिक आयु के एनसीसी कैडेट्स द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान किया गया। दे हेल्पिंग हैंड संस्था के अध्यक्ष नौशाद हाशमी द्वारा आयोजित व होटल सचिन इंटरनेशनल की चेयरपर्सन पूजा गुप्ता द्वारा प्रायोजित इस महा रक्तदान शिविर में 223 यूनिट रक्तदान किया गया। रक्तदान शिविर में मुख्य अतिथि एसपी देहात (हरिद्वार) शेखर चंद सुयाल व समाजसेवी सचिन गुप्ता रहे जिनके द्वारा एनसीसी कैडेट्स द्वारा किए जा रहे हैं इस जन सेवा कार्य की उन्मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई व एनसीसी कैडेट्स को उज्ज्वल भविष्य हेतु भरपूर आशीर्वाद दिया गया । एसपी देहात द्वारा अपने संबोधन में एनसीसी कैडेट्स को अपने जीवन में निरंतर रक्तदान करने हेतु प्रेरित किया गया व रक्तदान से होने वाले फायदे के बारे में भी अवगत कराया गया। इस अवसर पर श्रीमती पूजा गुप्ता द्वारा एनसीसी कैडेट्स का मनोबल बढ़ाया गया व उन्हें बताया गया की मानवता की सेवा ही मनुष्य का धर्म होना चाहिए। उन्होंने बताया कि रक्त कोई ऐसी वस्तु नहीं जो किसी फैक्ट्री में बनती हो, यह एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य के लिए किए जाने वाला सर्वोच्च दान है। इस अवसर पर दे हेल्पिंग हैंड संस्था के अध्यक्ष नौशाद हाशमी द्वारा एनसीसी कैडेट्स की सामाजिक कार्यों में ली जा रही रुचि की भरपूर प्रशंसा की गई व कैडेट्स को इस प्रकार के कार्य लगातार करते रहने हेतु प्रेरित किया गया। इस रक्तदान शिविर के आयोजन में 84 उत्तराखंड बटालियन एनसीसी के प्रशिक्षण प्रभारी रवि कपूर का विशेष योगदान रहा जिनके द्वारा एनसीसी कैडेट्स को लगातार सामाजिक कार्यों के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में केएलडीएवी (पीजी) कॉलेज, रुड़की के एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट (डॉक्टर) नवीन कुमार नोडल अधिकारी रहे व रक्तदान शिविर उनकी देखरेख में ही संपन्न हुआ। दी हेल्पिंग हैंड संस्था से सचिव रियासत अली, सरफराज, रहमान, सुशील, पूजा, अकरम, अखलाक, इनाम, खुशी अब्बासी, शावेज, बीएल शर्मा, अजय कुमार, निशांत फातिमा कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु उपस्थित रहे। रक्तदान करने वालों में सहयोगी एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट मुकेश कुमार, लेफ्टिनेंट रामकुमार, लेफ्टिनेंट संजय कसाना, डॉ संतोष कुमार शर्मा, पूर्व बीएचएम सत्येंद्र सिंह व एनसीसी कैडेट्स गौरी त्यागी, दिव्या कठैत, येशी, सलोनी, प्रांजल, सिया रावत, अक्षनंदा चंदेल, प्रिया, प्रशांत गिरी आदि द्वारा रुड़की ब्लड सेंटर के इंचार्ज डॉक्टर अखिल सैनी व उनकी टीम की देखरेख में रक्तदान किया।

पाठ्यक्रम में आमूलचूल परिवर्तन

आईआईटी-दिल्ली ने छात्रों पर बोझ कम करने और उद्योग जगत की बदलती मांगों को पूरा करने के लिए बारह वर्षों के बाद अपने पाठ्यक्रम में आमूलचूल परिवर्तन किया है। संस्थान के निदेशक रंगन बनर्जी ने मंगलवार को एक इंटरव्यू में कहा था, पाठ्यक्रम में पिछली बार संशोधन 2013 में किया गया था। इस बीच, उद्योग जगत की मांग तेजी से बदल रही है..एआई एक नया उभार है, और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। इस सुधार की कवायद 2022 में शुरू हुई थी। पिछले कुछ वर्षों में संस्थान ने हितधारकों से व्यापक प्रतिक्रिया ली है, और उनकी मांग और जरूरत के अनुसार जरूरी बन पड़े बदलाव पाठ्यक्रम में किए हैं।

पाठ्यक्रम को ही कम नहीं किया गया है, बल्कि कक्षा का आकार कम करने का फैसला भी किया गया है। पहले दो सेमेस्टर के लिए कक्षा का आकार अब 200 की बजाय 150 होगा ताकि छात्र पर अधिक ध्यान सुनिश्चित किया जा सके। कहा जा सकता है कि आईआईटी का पाठ्यक्रम संबंधी फैसला दूरगामी परिणाम हासिल करने की दृष्टि से किया गया है। देश में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इससे पूर्व नई शिक्षा नीति लागू की जा चुकी है और अब देश के एक प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान का यह फैसला क्रांतिकारी पर्वितन की दिशा में उठाया गया कदम करार दिया जा सकता है। वैसे भी एआई और प्रोग्रामिंग जैसे पाठ्यक्रमों का शिक्षण-प्रशिक्षण जरूरी बन गया है। जरूरी है कि जटिलताएं शिक्षण-प्रशिक्षण में खासी अवरोध खड़े करती हैं।

उच्च शिक्षा और खास तौर पर प्रतियोगी शिक्षण-प्रशिक्षण में विद्यार्थियों पर अनावयक तनाव रहता है, और तनाव इस कदर हावी हो जाता है कि आये दिन छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की खबरें आती रहती हैं।

यदि पाठ्यक्रम का बोझ बनिस्बत कम हो और कक्षा की छात्र स्ट्रेंथ ज्यादा न हो तो पढ़ाई-लिखाई के लिए परिणामोन्मुख माहौल तैयार हो सकता है। हालांकि आईआईटी-दिल्ली ने बारह साल बाद पाठ्यक्रम में बदलाव किया है, लेकिन बदलते समय के साथ ताल मिलाए रखने के लिए यह जरूरी कवायद है। तनावरहित शिक्षण-प्रशिक्षण हो तो न केवल उच्च शिक्षा का उद्देश्य पूरा होता है, बल्कि उच्च शिक्षा अपनी उपयोगिता भी साबित करती है। पाठ्यक्रम में कठिनता को कम करने का फैसला वास्तव में सराहनीय है। (आरएनएस)

कैडर अफसरों को जायज हक

केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) के कैडर अधिकारियों के मनोबल को बढ़ाने वाले फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने इन बलों में आईपीएस अधिकारियों की तैनाती में संतुलन रखने का रास्ता खोल दिया है। अदालत ने इन बलों में महानिरीक्षक स्तर तक के आईपीएस अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति दो वर्षों में उत्तरोत्तर' करने का आदेश दिया है ताकि कैडर अधिकारी अपने जायज हक से वंचित न हों और उन्हें पदोन्नति के अधिक अवसर मिलें। अपने ऐतिहासिक फैसले में सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने माना है कि सीएपीएफ में कैडर अधिकारियों की पदोन्नति में विलंब से उनके मनोबल पर प्रभाव पड़ सकता है।

सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने इन बलों की बहुप्रतीक्षित कैडर समीक्षा छह महीने में करने को कहा है जिस पर शीर्ष अदालत ने ही 2020 में रोक लगा दी थी। इन बलों के हजारों अधिकारियों ने गृह मंत्रालय से उनमें से प्रत्येक को संगठित समूह ए सेवा (ओजीएएस) के रूप में मानते हुए कैडर समीक्षा की मांग की थी, ताकि समय पर पदोन्नति में देरी से संबंधित उनके मुद्दे का समाधान किया जा सके।

पीठ ने कहा कि जब सीएपीएफ को ओजीएएस घोषित किया गया है, तो ओजीएएस को उपलब्ध सभी लाभ स्वाभाविक रूप से सीएपीएफ का भी मिलने चाहिए, यह नहीं हो सकता कि उन्हें एक लाभ दिया जाए और दूसरे से वंचित रखा जाए। याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि चूंकि भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (महानिरीक्षक रैंक) तक के पदों पर आसीन हैं, इसलिए उनकी पदोन्नति की संभावनाएं बाधित' हो रही हैं, जिससे सेवा पदानुक्रम में ठहराव आ रहा है। इसे स्वीकार करते हुए पीठ ने आदेश दिया, सभी सीएपीएफ में कैडर समीक्षा, जो वर्ष 2021 में होनी थी, आज से छह महीने की अवधि के भीतर पूरी की जाए।' उम्मीद है कि इस फैसले से पांचों केंद्रीय पुलिस बलों-सीआरपीएफ, बीएसएफ, सीआईएसएफ, आईटीबीपी और एसएसबी के कैडर अफसरों को उनका जायज हक मिलेगा और उनकी कर्तव्य भावना और मजबूत होगी।

मंत्रालय ने अपने वकील के माध्यम से कहा कि चूंकि ये बल विभिन्न राज्यों में तैनात हैं, इसलिए आईपीएस अधिकारी सीएपीएफ के प्रभावी संचालन के लिए आवश्यक' हैं, जिससे संबंधित राज्य सरकारों और उनके संबंधित पुलिस बलों के साथ सहयोग की सुविधा मिलती है, जिससे संघीय ढांचे को संरक्षित किया जा सकता है।(आरएनएस)

आंखों की रोशनी छीन सकती है मोबाइल की रोशनी

आपके मोबाइल फोन से एक ऐसी खतरनाक लाइट निकलती है जो आपके आंखों की रोशनी तक छीन सकती है। जितनी ज्यादा देर फोन पर बिजी रहेंगे, बीमारी की चपेट में आने की आशंका उतनी ही ज्यादा रहेगी। मोबाइल फोन से निकलने वाली नीले रंग की रोशनी सामान्य नहीं होती। यह बेहद खतरनाक है। दिन में तो सूरज की रोशनी होने के कारण यह सीधे नहीं दिखती। रात को फोन इस्तेमाल के दौरान यह नीली रोशनी सीधे रेटिना पर असर डालती है। एक अध्ययन में साबित हो चुका है कि एक महिला रोजाना सोते वक्त और सोकर उठने के तुरंत बाद फोन का इस्तेमाल करती थी। एक साल में उस महिला का कॉर्निया इसी नीली लाइट के कारण क्षतिग्रस्त हो गया। इसके अलावा नेत्ररोग विशेषज्ञों का मानना है कि मोबाइल स्क्रीन पर लगातार देखते रहने से आंखों का ब्लिंकिंग रेट कम हो गया है। सामान्य तौर पर प्रति मिनट 12 से 14 बार आंखें ब्लिंक करती हैं, लेकिन मोबाइल स्क्रीन पर बने रहने पर ब्लिंकिंग रेट छह से सात हो जाता है।

इससे आंखों में ड्राइनेस बढ़ रही है और आंखें कमजोर हो रही हैं। मोबाइल से निकलने वाली इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक तरंगें हमारे स्वास्थ्य लिए नुकसानदेह हैं। इन किरणों के कारण हमारी याददाश्त और सुनने की शक्ति प्रभावित हो सकती है। इससे निकलने वाले रेडिएशन के कारण कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी हो सकती है।

मोबाइल फोन और उसके टावरों से होने वाले रेडिएशन से नपुंसकता और ब्रेन ट्यूमर हो सकता है। जब आपकी स्क्रीन पर दिखे कि सिग्नल पूरे हैं, तभी फोन का इस्तेमाल करें। सिग्नल कमजोर होने पर इसका असर रेडिएशन के रूप में पड़ता है इस दौरान मोबाइल को सिग्नल लिए मशक्कत करनी पड़ती है।

कई शोधों में भी यह सामने आया है कि रेडिएशन का खतरा कमजोर सिग्नल के कारण ज्यादा होता है। पैंट के आगे के पॉकेट में फोन रखने से बचें, इससे नपुंसकता का खतरा होता है। इसके अलावा इसे दिल के पास न रखें और रात को सोते वक्त तकिये के नीचे तो कतई न रखें। तकिये के नीचे रखने से इसके रेण्डिएशन के कारण याददाश्त कमजोर हो सकती है। इसके अलावा फोन के ज्यादा गर्म होने की वजह से कई बार आग लगने की घटनाएं भी सामने आती रहती हैं। बात करते समय फोन को शरीर से दूर रखें। इससे रेडिएशन से कुछ हद तक बचाव संभव हो सकेगा। इसके लिए ईयर फोन का इस्स्तेमाल किया जा सकता है। कोशिश कीजि कि अधिकतम बातचीत मैसेज व चैटिंग के जरिए हो। एक सर्वेक्षण से पता चला है कि रेडियों तरंगों के रेडिएशन से उन चूहों के दिमाग डैमेज हो गए जिन पर ये अध्ययनकिया गया था। इलेक्ट्रिक फील्ड दीवारों या किसी अन्य फील्ड से ढके होते हैं, लेकिन रेडियोधर्मी अधिकांश दीवारों को पार कर सकते हैं। दरअसल मोबाइल से निकलने वाली इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक तरंगे हमारे स्व्वास्थ्य्य के लिए नुकसानदेह हैं। इन किरणों के कारण हमारी याददाश्त और सुनने की शक्ति प्रभावित हो सकती है।

कच्चा प्याज सेहत के लिए फायदेमंद

कच्चा प्याज खाने से शरीर का पाचन तंत्र बेहतर तरीके से काम करता है. अगर आपका पेट अक्सर गैस की समस्या से फूला रहता है तो कच्चे प्याज के सेवन से आपको इस समस्या में काफी फायदा मिलेगा.

कच्चे प्याज में ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो कैंसर के खतरनाक सेल्स को नष्ट करते हैं और इन्हें शरीर में बढ़ने से रोकते हैं. एक रिसर्च में इस बात की पुष्टि हुई है कि जो लोग हर रोज कच्चे प्याज का सेवन करते हैं उन्हें कैंसर होने की संभावना कम होती है.

कच्चा प्याज खाने से डायबिटीज होने की संभावना भी कम होती है. इसमें पाया जाने वाला सल्फर यौगिक डायबिटीज को नियंत्रित करने में मदद करता है. मैरीलैंड यूनिवर्सिटी के मेडिकल सेंटर के अनुसार, रोजा कच्चे प्याज के सेवन से ब्लैडर के संक्रमण की संभावना भी काफी घट जाती है. अगर किसी को हाई ब्लड प्रेशर की समस्या है तो उसे कच्चे प्याज का सेवन करना चाहिए, इस समस्या में काफी राहत मिलती है. गर्मी के मौसम में अगर खानपान पर ध्यान रखा जाए तो लू से आसानी से बचा जा सकता है. रोज के खाने से साथ एक प्लेट कच्चा प्याज का सलाद लू से आपकी रक्षा करता है.

दमकता और निखरा चेहरा चाहिए तो लगाएं मिल्क पाउडर

मिल्क पाउडर स्किन के लिए भी बेहद अच्छा होता है। इसे चेहरे पर लगाने पर न सिर्फ आपको निखरी त्वचा मिलेगी बल्कि चेहरे का ग्लो भी बढ़ जाएगा। इसके फायदे और बढ़ाने के लिए पाउडर को आप अन्य चीजों के साथ मिलाकर फेस पैक भी तैयार कर सकते हैं।

रंगत निखारने के लिए

एक टेबलस्पून मिल्क पाउडर, एक टेबलस्पून ओटमील पाउडर और दो चम्मच संतरे के जूस या नींबू के रस को एक साथ बोल में मिलाएं। जब मिक्स स्मूद हो जाए तो उसे चेहरे पर लगाएं। आंखों के आसपास के हिस्से पर इसे न लगाएं। 15-20 मिनट पैक को लगे रहने दें और फिर हल्के गरम पानी से चेहरा धो लें। सप्ताह में इस पैक को दो बार लगाएं।

काले धब्बों के लिए

चेहरे पर से काले धब्बे हटाने में भी मिल्क पाउडर मदद करता है। एक बोल में दो टेबलस्पून मिल्क पाउडर के साथ एक चम्मच दही और नींबू का रस मिलाएं। इस पेस्ट को चेहरे पर ऊपर से नीचे की ओर लगाएं। जब पैक सूख जाए तो हल्के हाथ से रगड़ते हुए चेहरे को वॉश करें। इसके लगातार इस्तेमाल से आपको कुछ ही दिनों में चेहरे से काले धब्बे गायब होते दिखना शुरू हो जाएंगे।

पिंपल्स के लिए

पिंपल्स होने पर जहां दूध और मलाई को चेहरे से दूर रखने की सलाह दी जाती है वहीं मिल्क पाउडर इस समस्या को दूर करने में मदद कर सकता है। दो मीडियम चम्मच मिल्क पाउडर को एक टीस्पून हल्दी और एक मीडियम चम्मच शहद के साथ मिलाएं। इस पेस्ट को फेस पर लगाएं और 15 मिनट बाद धो लें। सप्ताह में तीन बार इस पैक को लगाएं।

ऑइली स्किन के लिए

ऑइली स्किन के कारण कई तरह की परेशानियां आती हैं। इससे निपटने के लिए एक बोल में एक टेबलस्पून मिल्क पाउडर और मुल्तानी मिट्टी मिलाएं और उसमें दही या नींबू का रस डालें। पेस्ट को अच्छे से मिक्स कर लें और चेहरे पर लगाएं। 20 मिनट बाद ठंडे पानी से चेहरा धो लें। इसके बाद माइल्ड फेसवॉश का इस्तेमाल करें। पैक को सप्ताह में चार बार लगाएं।

आईलाइनर लगाते समय महिलाएं न करें ये गलतियां, बिगड़ सकता है पूरा लुक

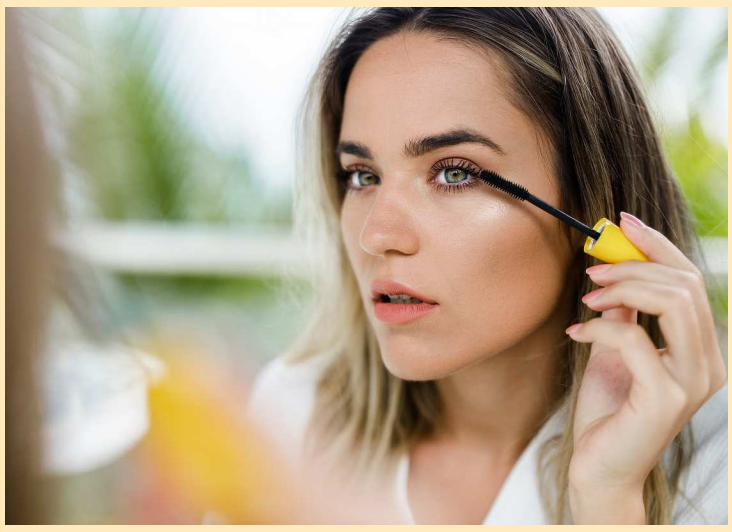

आईलाइनर को आंखों का सबसे अहम हिस्सा माना जाता है क्योंकि यह आंखों को आकर्षक और निखारता है। हालांकि, कई महिलाएं आईलाइनर लगाते समय कुछ छोटी-छोटी गलतियां कर बैठती हैं, जिससे उनका लुक सही नहीं आ पाता है। इस लेख में हम आपको कुछ ऐसी ही सामान्य गलतियों के बारे में बताएंगे, जिनसे आपको बचना चाहिए ताकि आपका लुक हमेशा बेहतरीन रहे और आपकी आंखें खूबसूरत दिखें।

आईलाइनर की मोटी लाइन बनाना

कई महिलाएं आईलाइनर लगाते समय एक मोटी लाइन खींच देती हैं, जिससे उनका लुक बहुत ही भारी लगने लगता है। इससे बचने के लिए हमेशा पतली और सही लाइन बनाएं।

इसके लिए आप एक छोटे ब्रश या पेंसिल आईलाइनर का इस्तेमाल कर सकती हैं। इससे आपकी आंखें न केवल खूबसूरत दिखेंगी, बल्कि आपका लुक भी संतुलित रहेगा और आप हमेशा आकर्षक लगेंगी।

केवल ऊपरी पलक पर ध्यान देना

कई महिलाएं सिर्फ ऊपरी पलक पर आईलाइनर लगाकर छोड़ देती हैं, जबकि निचली पलक को भी नजरअंदाज करना गलत है।

निचली पलक पर हल्का सा आईलाइनर लगाने से आपकी आंखें बड़ी और आकर्षक दिखती हैं।

इसके अलावा निचली पलक पर आईलाइनर लगाने से आपका लुक पूरा होता है और आपकी आंखें अधिक निखरी हुई लगती हैं। इसलिए दोनों पलक पर आईलाइनर लगाना न भूलें ताकि आपका लुक संतुलित और खूबसूरत रहे।

सही रंग का चुनाव न करना

आईलाइनर चुनते समय रंग का चुनाव बहुत अहम होता है।

कई बार महिलाएं गलत रंग चुन लेती हैं, जो उनके चेहरे पर अच्छा नहीं लगता है। उदाहरण के लिए काले रंग का आईलाइनर हर त्वचा पर अच्छा नहीं लगता, खासकर गहरी त्वचा पर।

इसके बजाय भूरे या नेवी ब्लू जैसे रंगों का चयन करें, जो त्वचा की रंगत से मेल खाएं और आंखों को अधिक निखार दें। सही रंग चुनने से आपका लुक संतुलित और आकर्षक दिखेगा।

अच्छे से न मिलाना

आईलाइनर लगाते समय उसे अच्छे से मिलाना बहुत जरूरी होता है ताकि वह देखने में प्राकृतिक लगे और कोई कठोर रेखा न बने।

इसके लिए आप एक छोटे ब्रश या उंगली की मदद से हल्के हाथों से उसे फैलाएं। इससे आपकी आंखें अधिक निखरी हुई दिखेंगी और आपका लुक भी बेहतरीन रहेगा।

सही तरीके से मिलाने पर आईलाइनर देखने में प्राकृतिक और सुंदर लगेगा, जिससे आपका पूरा लुक आकर्षक और संतुलित दिखेगा।

ज्यादा मात्रा में उपयोग करना

आईलाइनर का उपयोग करते समय मात्रा पर ध्यान देना चाहिए। ज्यादा आईलाइनर लगाने से आंखें भारी दिखने लगती हैं, जिससे प्राकृतिक सुंदरता छुप जाती है।

हमेशा थोड़ी मात्रा में ही आईलाइनर लगाएं ताकि आपकी आंखें खूबसूरत दिखें और आपका लुक संतुलित रहे।

इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर आप अपने आईलाइनर को सही तरीके से लगा सकती हैं और हमेशा आकर्षक दिख सकती हैं। (आरएनएस)

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

कई खूबियों से समृद्ध हैं ये डॉल्फिन, जानिए इनकी विशेषताएं

डॉल्फिन एक ऐसी मछली है, जो पानी में झुंड बनाकर रहती है। यह मछली दिखने में बेहद खूबसूरत होती है। डॉल्फिन की कई अलग-अलग प्रजातियां होती हैं, जिनमें से कुछ समुद्र में पाई जाती हैं, जबकि कुछ नदियों में।

इस लेख में हम आपको डॉल्फिन की पांच प्रमुख प्रजातियों के बारे में बताएंगे, जो आपको हैरान कर देंगी और आपको इनकी दुनिया के बारे में अधिक जानने की इच्छा होगी।

ओर्का डॉल्फिन

ओर्का डॉल्फिन को किलर व्हेल के नाम से भी जाना जाता है। यह दुनिया की सबसे बड़ी डॉल्फिन प्रजातियों में से एक है, जो लगभग 20 से 26 फीट लंबी होती हैं।

इनका वजन 6 टन तक हो सकता है। ओर्का डॉल्फिन समुद्रों में पाई जाती हैं और इन्हें बहुत ही सामाजिक और समझदार जानवर माना जाता है।

ये अक्सर अपने समूह के साथ शिकार करती हैं और अपने बच्चों की देखभाल भी करती हैं।

स्पिनर डॉल्फिन

स्पिनर डॉल्फिन अपनी अनोखी कूदने की शैली के लिए जानी जाती हैं, जिसमें वे हवा में कूदकर घूमती हैं।

इनका आकार लगभग 6 फीट लंबा होता है और इनका वजन 1 टन तक हो सकता है। स्पिनर डॉल्फिन आमतौर पर गर्म समुद्रों में पाई जाती हैं और इन्हें बहुत ही चंचल और ऊर्जा से भरपूर जानवर माना जाता है।

ये अक्सर अपने समूह के साथ खेलती हैं और समुद्र की लहरों पर कूदती हैं।

बॉटलनोज डॉल्फिन

बॉटलनोज डॉल्फिन अपने अनोखे आकार वाले नथुने के कारण जानी जाती हैं, जो इनकी पहचान बन चुका है।

इनका आकार लगभग 8 से 12 फीट लंबा होता है और इनका वजन 400 किलोग्राम तक हो सकता है।

बॉटलनोज डॉल्फिन समुद्रों और नदियों दोनों में पाई जाती हैं। ये बहुत ही समझदार और सामाजिक जानवर होती हैं, जो अपने समूह के साथ मिलकर शिकार करती हैं और अपने बच्चों की देखभाल करती हैं।

ग्वियाना डॉल्फिन

ग्वियाना डॉल्फिन दक्षिण अमेरिका की नदियों में पाई जाने वाली एक अनोखी प्रजाति है, जिसका आकार लगभग 5 फीट लंबा होता है।

इनका वजन 150 किलोग्राम तक हो सकता है। ग्वियाना डॉल्फिन को अक्सर बोट्रो भी कहा जाता है।

ये बहुत ही शांतिपूर्ण जानवर होती हैं, जो अपने समूह के साथ मिलकर नदियों में तैरती हैं और भोजन करती हैं। इनकी त्वचा गुलाबी रंग की होती है, जो इन्हें और भी अनोखा बनाती है।

रिवर डॉल्फिन

रिवर डॉल्फिन दक्षिण एशिया की नदियों में पाई जाने वाली एक दुर्लभ प्रजाति है, जिसका आकार लगभग 4 फीट लंबा होता है।

इनका वजन 100 किलोग्राम तक हो सकता है। रिवर डॉल्फिन को गंगा डॉल्फिन भी कहा जाता है, क्योंकि ये गंगा नदी में पाई जाती हैं। ये बहुत ही शांतिपूर्ण जानवर होती हैं, जो अपने समूह के साथ मिलकर भोजन करती हैं और अपने बच्चों की देखभाल करती हैं। (आरएनएस)

शब्द सामर्थ्य -69

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. घुमाव-फिराव वाला, आड़ा-तिरछा, जो कठिन हो 3. कुशलता, दक्षता, विशेषज्ञता 6. लोग, प्रजा 7. सीता, जनकनंदनी 9. सुंदर, कामना करने योग्य 10. क्रोधपूर्वक बोलने को उद्यत होना, जोश में आना, क्रोधातिरेक में चेहरे का लाल होना 13. अधीनता, मातहती, वश 14. दबाव, भार, वजन 16. हद, मर्यादा 18. प्रमाण-पत्र, प्रमाणिक कथन या बात 19. पछताना (मुहा.) 21. अनुचित मिश्रण, मिलावट 22. विफल, बेहोश, बौखलाया हुआ।

ऊपर से नीचे

1. सहारा, आश्रय, प्रतिज्ञा, संकल्प 2. परिश्रम 4. रात, रात्रि, निशा 5. पुत्र, बेटा 8. मूल्य, दाम 9. कपड़े का मोटा परदा 11. संदेश भेजना, उच्चारण कराना, कहलवाना 12. मृतकों को जीवित और रोगियों को स्वस्थ कर देने वाला व्यक्ति, प्रेमपात्र की संज्ञा 14. देने की क्रिया, खैरात 5. कुमार्गी, दुराचारी 17. मस्तक, माथा, ललाट 18. प्रश्न, समस्या 20. सहायता, सहारा 21. पशुओं को खिलाने वाली हरी पत्तियां, तृण, तिनका।

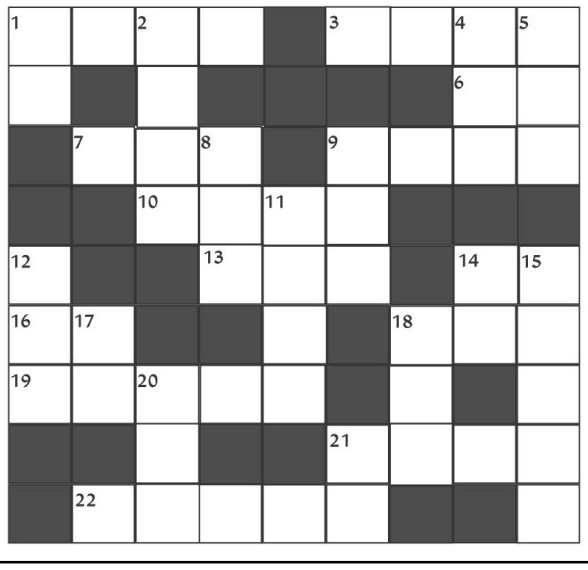

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 68 का हल

ज	द्दो	जे	ह	द	■	स	पू	त
ल	■	ब	ल	वा	न	■	■	द
म	ह	क	■	खा	म	खां	■	बी
ग्न	■	त	ल	ना	■	स	फ	र
■	म	रा	■	■	■	ना	टा	■
■	हि	■	स	■	■	■	फ	न
■	ला	ज	वा	ब	■	म	ट	र
मां	■	ग	■	सं	त	ति	■	भ
■	मा	त	ह	त	■	■	प	क्षी

ऑपरेशन खुकरी पर फिल्म बनाने जा रहे रणदीप हुड्डा

रणदीप हुड्डा पिछली बार फिल्म जाट में दिखे थे, जिसमें उनके काम को तो सराहा गया, लेकिन यह बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी। रणदीप इस फिल्म में सनी देओल से भिड़ते नजर आए। अब रणदीप की नई फिल्म का ऐलान हो गया है। दरअसल, अभिनेता अपनी अगली फिल्म में भारतीय सेना के सबसे साहसिक ऑपरेशन में से एक को बड़े पर्दे पर जीवंत करने जा रहे हैं। रणवीर के किरदार से पर्दा भी उठ गया है।

रणदीप की इस फिल्म का नाम ऑपरेशन खुकरी है। यह फिल्म साल 2000 में पश्चिमी अफ्रीका के सिएरा लियोन में हुए एक वास्तविक सैन्य अभियान पर आधारित है, जहां भारतीय सेना के 233 जवानों को विद्रोही बलों ने बंधक बना लिया था।

यह मिशन भारतीय सेना द्वारा अब तक किए गए सबसे खतरनाक और साहसिक अभियानों में से एक माना जाता है।

गौरतलब है कि रणदीप भारतीय सेना के इस ऑपरेशन से खासा प्रभावित हैं।

फिल्म में रणदीप हुड्डा मेजर जनरल राज पाल पुनिया की भूमिका निभाएंगे, जो उस वक्त 14वीं मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री के कंपनी कमांडर थे और इस मिशन की अगुवाई कर रहे थे। ऑपरेशन खुकरी की कहानी किताब ऑपरेशन खुकरीः द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ द इंडियन आर्मीज ब्रेवेस्ट पीसकीपिंग मिशन अब्रॉड से प्रेरित है, जिसे पेंग्विन रैंडम हाउस इंडिया ने प्रकाशित किया है।

इस किताब के फिल्मी अधिकार अब राहुल मित्रा फिल्म्स और रणदीप हुड्डा फिल्म्स ने हासिल कर लिए हैं।

ऑपरेशन खुकरी की कहानी पर काम शुरू हो चुका है और इसे बड़े पैमाने पर शूट किया जाएगा। कहानी तैयार होने के बाद फिल्म की कास्टिंग पर काम शुरू होगा। कहा जा रहा है कि इस फिल्म की शूटिंग इस साल के अंत में शुरू हो जाएगी, जबकि यह फिल्म 2027 तक सिनेमाघरों में रिलीज हो सकती है।

यह कहानी सिर्फ हथियारों और युद्ध की नहीं, बल्कि वीरता, बलिदान और भाइचारे की है।

रणदीप ने ऑपरेशन खुकरी के बारे में बात करते हुए कहा, यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मैं ऐसे योद्धा की भूमिका निभा रहा हूं, जिसने 75 दिन तक दुश्मन के बीच फंसे जवानों को न सिर्फ जिंदा निकाला बल्कि भारत के सैन्य इतिहास में एक सुनहरा अध्याय जोड़ दिया।

उन्होंने कहा, ऑपरेशन खुखरी एक ऐसी कहानी है जिसने मुझे गहराई से प्रभावित किया है। रणदीप ने बताया कि वह इस फिल्म का हिस्सा बनकर काफी खुश हैं।

एथलीट्स के संघर्ष पर आधारित फिल्म अंगीकारम का दमदार फर्स्ट लुक रिलीज

स्वास्तिक विज़न्स के बैनर तले बन रही पैन-इंडिया फिल्म अंगीकारम का पहला पोस्टर सामने आ गया है, जिसमें एक एथलीट के किरदार में नजर आ रहे हैं केजेआर, जो इस फिल्म से अपना एक्टिंग डेब्यू कर रहे हैं।

पोस्टर में वह एथलीट ०5 टीशर्ट में बैक साइड पोज देते हुए बेहद दमदार अंदाज में दिखाई दे रहे हैं, जबकि बैकग्राउंड में कोर्ट और बैटल का माहौल दिखाया गया है, जो फिल्म के थीम की झलक देता है। अंगीकारम का निर्देशन कर रहे हैं जे।पी। तेनपथियन, जो फिल्ममेकर पा रंजीत के असिस्टेंट रह चुके हैं। फिल्म की कहानी असली घटनाओं से प्रेरित है और भारतीय एथलीट्स की जिंदगी, उनके संघर्ष और स्पोर्ट्स के भीतर की राजनीति को उजागर करती है।

निर्माताओं के अनुसार फिल्म की शूटिंग का आखिरी फेज तेजी से चल रहा है और जल्द ही इसकी रिलीज डेट की घोषणा की जाएगी। फिल्म को प्रशांत, अजित भास्कर और अरुण मुरुगन ने मिलकर प्रोड्यूस किया है। अंगीकारम एक रियलिस्टिक स्पोर्ट्स ड्रामा के रूप में सामने आ रही है, जो केवल खेल नहीं बल्कि कोर्ट रूम बैटल और सामाजिक सवालों को भी केंद्र में रखती है।

फिल्म का फर्स्ट लुक सामने आते ही फैंस के बीच इसे लेकर उत्सुकता बढ़ गई है। अब देखना होगा कि क्या केजेआर का एक्टिंग डेब्यू इस फिल्म के जरिए दर्शकों का दिल जीत पाता है या नहीं।

माइंडसेट को बनाओ मजबूत, नतीजे होंगे शानदार: रकुल प्रीत

मशहूर एक्ट्रेस रकुल प्रीत सिंह न सिर्फ अपनी फिल्मों और खूबसूरती के लिए जानी जाती हैं, बल्कि अपनी पॉजिटिव सोच और लाइफस्टाइल के लिए भी चर्चा में रहती हैं। हाल ही में उन्होंने अपने इंस्टाग्राम पर एक किताब का पन्ना शेयर किया, जिसमें जिंदगी से जुड़ी गहरी बात छिपी हुई थी। दरअसल, इस पन्ने पर लिखा था- आपके सोचने का तरीका, हमारी जिंदगी की बुनियाद होता है।

इस पोस्ट को शेयर करते हुए रकुल प्रीत सिंह ने कैप्शन में लिखा, माइंडसेट पर काबू रखें, तो नतीजों पर भी काबू होगा। यानी अगर आप अपने सोचने के तरीके पर काबू पा लेते हैं, तो आप अपने नतीजों पर भी काबू पा सकते हैं। रकुल का यह पोस्ट इस बात का सबूत है कि वह अपने फैंस का सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करती, बल्कि जिंदगी से जुड़ी प्रेरणाएं भी उन्हें देती रहती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने पिता के साथ एक पोस्ट शेयर किया था। इस पोस्ट में उन्होंने एक पुरानी तस्वीर साझा की, जिसमें वह अपने पिता के साथ स्कूटर पर बैठी हुई दिखाई दीं। यह तस्वीर उनके बचपन की थी। इस तस्वीर को शेयर करते हुए उन्होंने कैप्शन में लिखा, सेना दिवस भले ही पूरी दुनिया में मनाया जाता हो, लेकिन मेरा दिल एक वर्दी के लिए धड़कता है, मेरे पापा की वर्दी के लिए।

एक आर्मी ऑफिसर के बच्चे के रूप में मैंने बचपन से ही त्याग, सम्मान और हिम्मत का मतलब समझा। आज मैं सिर्फ अपने पापा को नहीं, बल्कि उन सभी सैनिकों को सलाम करती हूं, भारत और दुनिया भर के, जो खुद से पहले देश की सेवा को चुनते हैं। खासकर हाल के समय में भारतीय सेना की बहादुरी हमें याद दिलाती है कि शांति मुफ्त में नहीं मिलती, उसे सैनिकों की कुर्बानी से सुरक्षित रखा जाता है। मैं दिल से शुक्रगुजार हूं। वर्कफ्रंट की बात करें तो रकुल प्रीत सिंह आखिरी बार फिल्म मेरे हसबैंड की बीवी में नजर आई थीं, जिसमें उनके साथ अर्जुन कपूर और भूमि पेडनेकर भी अहम किरदार में थे।

ऋतिक रोशन और होम्बाले फिल्म्स की पैन-इंडिया प्रोजेक्ट का ऐलान

ऋतिक रोशन ने ऑफिशियली तौर पर होम्बेल फिल्म्स के साथ एक अपकमिंग प्रोजेक्ट के लिए हाथ मिलाया है, जो कि काफी एक्साइटिंग है। स्टूडियो ने फिल्म को धैर्य, भव्यता और गौरव से भरी कहानी बताया है, जो शक्तिशाली भावनाओं और क्रिएटीव कहानी होने का वादा करता है।

मेकर्स ने सोशल मीडिया पर एक नोट पोस्ट किया, जिसमें लिखा था, वे उन्हें ग्रीक गॉड कहते हैं, उन्होंने दिलों पर राज किया है, सीमाओं को तोड़ा है और हम देखते हैं कि वह वास्तव में क्या हैं। हम सालों की मेहनत से बने इस कोलेबोरेशन के लिए होम्बले परिवार में ऋतिक रोशन का स्वागत करते हुए गर्व महसूस कर रहे हैं। धैर्य, भव्यता और गौरव की एक कहानी सामने आने वाली है, द बिंग बैंग की शुरुआत।

ऋतिक ने भी इस प्रोजेक्ट को लेकर अपना एक्साइटमेंट दिखाया है। उन्होंने कहा, होम्बले पिछले कुछ सालों से बेहतरीन कहानियां पेश कर रहा है। मैं उनके साथ कोलेब करने और अपने फैंस को खास सिनेमैटिक एक्सपीरियंस देने के लिए एक्साइटेड हूं। हम बड़े सपने देख रहे हैं और इस विजन को रियल बनाने के लिए तैयार हैं। होम्बले फिल्म्स के फाउंडर विजय किरागंदूर ने भी अपने विचार व्यक्त किए और कहा, इस कोलेबोरेशन से बहुत खुश हूं, होम्बले फिल्म्स में, हमारा उद्देश्य ऐसी कहानियां बताना है जो इंस्पायर करती हैं। ऋतिक रोशन के साथ काम करना उस विजन को साकार करने की दिशा में एक कदम आगे है, एक ऐसी फिल्म बनाना जो अलग सिनेमैटिक एक्सपीरियंस दे। होमबेल फिल्म्स ने केजीएफ चैप्टर 1 और 2, सलारः पार्ट 1 - सीजफायर और कांतारा जैसी बड़ी पैन इंडिया हिट फिल्में दी हैं। उनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलता हासिल करने के लिए जानी जाती हैं।

ऋतिक अपकमिंग फिल्म वॉर 2 में नजर आएंगे, अयान मुखर्जी द्वारा निर्देशित वॉर 2 में जूनियर एनटीआर और कियारा आडवाणी भी अहम रोल में हैं। यह फिल्म एक स्पाई थ्रिलर है जिसमें कबीर (ऋतिक रोशन) और नटराज (जूनियर एनटीआर) एक बिल्ली और चूहे के पीछा में उलझे हुए हैं। यह फिल्म जूनियर एनटीआर की मोस्ट अवेटेड बॉलीवुड डेब्यू है। जूनियर एनटीआर के जन्मदिन पर रिलीज किए गए टीजर में जबरदस्त एक्शन सीक्वेंस, हाई-स्टेक फाइट सीन और एक एंटरटेनिंग कहानी को दिखाया गया है, जो दो लीड एक्टर के बीच एपिक फेस ऑफ के लिए मंच तैयार करता है।

मोदी सरकार का 11वां साल- भारत के बदलाव में एक बड़ी उपलब्धि

हरदीप एस पुरी

लोकतंत्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे वंचितों और अल्पवंचितों तक सेवाओं और सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित करने में उच्च मानकों पर खरे उतरें। भारत में यह कसौटी और भी कठोर है। कोई भी नारा बिना उद्देश्य के और कोई भी दावा बिना परिणाम के नहीं टिकता। वास्तविक बदलाव का फायदा समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए, क्योंकि हमारे लोकतंत्र में, अंत्योदय (समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान) के लिए वोट किया जाता है। यही कारण है कि मोदी 3.0 के एक वर्ष में, दिल्ली, महाराष्ट्र और हरियाणा में मिले शानदार जनादेश केवल राजनीतिक उपलब्धि नहीं हैं, बल्कि वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि आज के भारत में, बयानबाजी नहीं, बल्कि काम करके भरोसा जीता जाता है।

अंत्योदय के माध्यम से सर्वोदय के दर्शन पर आधारित कार्यक्रम यह सुनिश्चित करते हैं कि देश के विकास में कोई भी भारतीय पीछे न छूट जाए। 25 करोड़ से अधिक लोगों को कई तरह की गरीबी से बाहर निकाला गया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान) के माध्यम से 11 करोड़ से अधिक किसानों को ?3.68 लाख करोड़ से अधिक वितरित किए गए हैं। लखपति दीदी पहल ने एक करोड़ से अधिक ग्रामीण महिलाओं को सालाना ?1 लाख से अधिक आय प्राप्त करने का अधिकार दिया है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत लगभग 3 करोड़ घरों को मंजूरी दी गई है।

जल जीवन मिशन के तहत, 15.44 करोड़ से अधिक ग्रामीण घरों में नल के पानी के कनेक्शन उपलब्ध कराए गए हैं। 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी नागरिकों को प्रति वर्ष 5 लाख रुपये का निःशुल्क स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करने के लिए, आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी पीएम-जेएवाई) का विस्तार किया गया है, चाहे उनकी आय कुछ भी हो। इससे लगभग 6 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों को लाभ होने की उम्मीद है, जिससे उन्हें व्यापक स्वास्थ्य सेवा और वित्तीय सुरक्षा मिलेगी। इसके अलावा, इस योजना का विस्तार करके अग्रिम पंक्ति के सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को भी इसमें शामिल किया गया। ये चौंका देने वाले आंकड़े केवल आंकड़े नहीं हैं, बल्कि लाखों भारतीय घरों में बदलाव की कहानियां हैं।

आतंकवादियों के खिलाफ भारत की जीरो टॉलरेंस नीति से संबंधित प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता पहलगाम हमले के बाद त्वरित प्रतिक्रिया में स्पष्ट थी, जहां आतंकवादियों ने निर्दोष पर्यटकों को निशाना बनाया था। देश ने नुकसान पर शोक व्यक्त किया, लेकिन एकजुट होकर ऑपरेशन सिंदूर को सटीकता और दबदबे के साथ अंजाम दिया, जिससे उसके आतंकवाद से लड़ने और अपने नागरिकों की रक्षा करने के संकल्प की पुष्टि हुई। दुनिया ने प्रधानमंत्री मोदी के मजबूत और निर्णायक नेतृत्व द्वारा समर्थित भारतीय रक्षा बलों की तकनीकी और रणनीतिक श्रेष्ठता देखी है।

दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति आत्मनिर्भरता के लिए रणनीतिक निवेश से मेल खाती है।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत की व्यापक सटीकता, आंशिक रूप से कई वर्षों तक स्वदेशी रक्षा क्षमता पर लगातार ध्यान केंद्रित करने के कारण सक्षम हुई। 2014 के बाद, भारत के रक्षा विनिर्माण का तेजी से आधुनिकीकरण हुआ है, निर्यात में भारी बढ़ोतरी हुई है। यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ है। आत्मनिर्भर भारत मिशन के तहत, रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया (डीएपी), रक्षा उत्पादन और निर्यात प्रोत्साहन नीति (डीपीईपीपी) जैसे प्रमुख सुधार और कुछ क्षेत्रों के लिए 100त्न एफडीआई खोलने से घरेलू कंपनियों को फलने-फूलने में मदद मिली है।

ड्रोन और उसके कलपुर्जों के लिए दो विशेष पीएलआई योजनाओं की शुरुआत से अगली पीढ़ी के नवाचार को और भी बढ़ावा मिला है। आज, भारत द्वारा डिजाइन की गई मिसाइल प्रणाली, बख्तरबंद वाहन और नौसैनिक प्लेटफॉर्म न केवल हमारी सेनाओं में तैनात हैं, बल्कि 80 से अधिक देशों को निर्यात किए गए हैं। इससे ऐसे समय में क्षेत्रीय सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की छवि मजबूत हुई है, जब विश्वसनीय रक्षा भागीदारों पर वैश्विक भरोसा बहुत अधिक है।

विनिर्माण इसी नजरिये के केंद्र में है। भारत बड़े निवेश और सरकारी प्रोत्साहनों के कारण सेमीकंडक्टर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स असम में ?27,000 करोड़ के निवेश से सेमीकंडक्टर असेंबली और परीक्षण संयंत्र बना रहा है, जिसके 2025 के मध्य तक परिचालन में आने और लगभग 27,000 नौकरियां पैदा होने की उम्मीद है। इस बीच, एचसीएल और फॉक्सकॉन का ?3,706 करोड़ का संयुक्त उद्यम उत्तर प्रदेश के जेवर में एक सेमीकंडक्टर इकाई स्थापित करने के लिए तैयार है, जो डिस्प्ले ड्राइवर चिप्स पर ध्यान केंद्रित करेगी और इसका उत्पादन 2027 में शुरू होगा।

भारत अब दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है, जिसमें 1.57 लाख से ज्यादा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप हैं। इनमें 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न और 3,600 से ज्यादा डीप-टेक वेंचर शामिल हैं जो एआई, बायोटेक और सेमीकंडक्टर पर केंद्रित हैं।

अकेले हमारे अंतरिक्ष क्षेत्र में 200 से ज्यादा स्टार्टअप सामने आए हैं, जो एक भरोसेमंद इनोवेशन अर्थव्यवस्था के उदय का संकेत है। स्टार्टअप इकोसिस्टम ने पहले ही 17.2 लाख से ज्यादा प्रत्यक्ष रोजगार पैदा किए हैं और समस्या-समाधानकर्ताओं (प्रॉब्लम सॉल्वर्स) एवं उद्यमियों की एक नई पीढ़ी को प्रेरित किया है।

इस बीच, भारत धीरे-धीरे दुनिया के सबसे जुड़े हुए लोकतंत्र के रूप में उभरा है। 80 करोड़ से ज्यादा इंटरनेट यूजर्स और 136 करोड़ आधार नामांकन के साथ, यह दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल पहचान कार्यक्रम बन गया है। अब हमारी वैश्विक डिजिटल पेमेंट में 46त्न हिस्सेदारी हो गई है, जो यूपीआई जैसे प्लेटफॉर्म पर आधारित है जिसने वित्तीय लेन-देन को सभी के लिए आसान बना दिया है। इन प्रणालियों ने न केवल नागरिकों को सशक्त बनाया है बल्कि शासन को और भी स्मार्ट, तेज और पारदर्शी बनाया है।

2024-25 के केंद्रीय बजट में हमारी सरकार की निर्णय लेने की क्षमता साफ नजर आती है। कुल व्यय ?44.6 लाख करोड़ निर्धारित किया गया, जिसमें पूंजीगत व्यय को अभूतपूर्व रूप से बढ़ाकर ?10 लाख करोड़ किया गया। कर छूट को बढ़ाया गया, मध्यम वर्ग के लिए रिबेट दोगुनी कर दी गई और लंबे समय से स्टार्टअप के लिए चिंता का विषय रहे एंजल टैक्स को समाप्त कर दिया गया। इन सुधारों से उपभोग में बढ़ोतरी होती है, उद्यमशीलता को बढ़ावा मिलता है और भारत के दीर्घकालिक विकास पथ को मजबूती मिलती है।

मोदी 3.0 के एक साल पूरे होने पर, बदलाव स्पष्ट नजर आ रहा है। सड़कें, कारखाने और सौर पैनल सिर्फ प्रगति के संकेत नहीं हैं, बल्कि वे आकांक्षाओं की नींव हैं। आर्थिक, सामाजिक और रणनीतिक सहित हर क्षेत्र में भारत राष्ट्रीय स्तर पर नवीनीकरण का एक नया अध्याय लिख रहा है।

जनादेश भी स्पष्ट है। विजन बरकरार है। और, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में, निर्णायक दशक अच्छी तरह से आगे बढ़ रहा है। इतिहास इस वक्त को सिर्फ तेज विकास के चरण के रूप में ही नहीं, बल्कि उस क्षण के रूप में दर्ज करेगा, जब भारत ने विश्वास किया, बदलाव किया और नेतृत्व किया है।

लेखक भारत सरकार में केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हैं

सू- दोकू क्र.69

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.68 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

विराट कोहली के सपने साकार

मनोज चतुर्वेदी

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने पहली बार आईपीएल खिताब जीता जरूर पर इसे विराट कोहली के सपने के साकार होने के तौर पर ही लिया गया। इस कारण फाइनल मैच का परिणाम आने पर अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम पर बने माहौल ने 2011 में वानखेड़े स्टेडियम में आईसीसी वनडे विश्व कप जीतने पर बने माहौल की यादें ताजा कर दीं। उस वक्त सारी टीम सचिन तेंदुलकर के विश्व कप जीतने के सपने के साकार होने पर उन्हें कंधे पर उठा कर घुमा रही थी। वजह यह थी कि विराट 2008 से इस टीम को खिताब जिताने के लिए प्रयास करते रहे थे पर खिताब से दूरी खत्म होकर नहीं दे रही थी।

इस खिताब का विराट को किस बेसब्री से इंतजार था, इसे उनकी भावनाओं से समझा जा सकता है। जॉश हेजलवुड के आखिरी ओवर की पहली दो गेंदों पर छक्का लगते ही आरसीबी का खिताब जीतना पक्का हो गया था। खिताब तय होते ही विराट की आंखें खुशी से नम हो गई और खेल खत्म होते ही वह मैदान पर सिर झुका कर अपनी भावनाएं बयां करते रहे। जिस काम को अनिल कुंबले, डेनियल विटोरी और खुद विराट कप्तान रहते नहीं कर पाए थे, उसे रजत पाटीदार ने कर दिखाया।

इस तरह अब मुंबई इंडियंस, चेन्नई सुपर किंग्स, कोलकाता नाइट राइडर्स, डेक्कन चार्जर्स, राजस्थान रॉयल्स, सनराइजर्स हैदराबाद और गुजरात टाइटंस के साथ आरसीबी का भी नाम आईपीएल खिताब जीतने वाली टीमों में शामिल हो गया है। आरसीबी का यह फाइनल खेलने का चौथा मौका था जिसमें से 2009 और 2016 में तो वह बहुत ही मामूली अंतर से पिछड़ कर खिताब जीतने से रह गई थी। 2009 के फाइनल में उसे छह रनों से और 2016 में आठ रनों से हार का सामना करना पड़ा था। हां, वह 2011 के फाइनल में जरूर बुरी तरह से हार गई थी। पर इन सबकी कमी उसने पंजाब किंग्स को छह रनों से हरा कर पूरी कर दी। आरसीबी का खिताबी सपना तो पूरा हो गया पर पंजाब किंग्स का सपना अधूरा बना हुआ है। अय्यर जिस तरह से कोच रिकी पोंटिंग के साथ मिल कर टीम को तस्वीर बदलने में सफल हुए हैं और उन्होंने दूसरे क्वालिफायर में जिस तरह से मुंबई इंडियंस की चुनौती तोड़ी, उससे वह भी खिताबी मजबूत दावेदार मानी जा रही थी पर शायद किस्मत में चैंपियन बनना लिखा नहीं था। इस आईपीएल खिताब का आरसीबी और विराट को इंतजार था, उसी तरह लग रहा था कि नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में मौजूद दर्शक भी चाहते थे कि विराट की पिछले 17 सालों से चली आ रही दूरी खत्म हो। पूरा स्टेडियम आरसीबी की जर्सी पहने पटा पड़ा था। आरसीबी के पक्ष में चौका या छक्का लगने या फिर विकेट मिलने पर स्टेडियम शोर से गूंज उठता था। आरसीबी टीम ने विराट और उनके चहेते दर्शकों को निराश नहीं किया। खिताब जीतने पर भावनाओं से भरे विराट ने कहा, यह जीत जितनी टीम के लिए है, उतनी ही प्रशंसकों के लिए भी है। यह पूरे 18 सालों का इंतजार था। मैंने इस टीम को अपना युवा समय, अपना सर्वश्रेष्ठ दौर और अपना अनुभव सब कुछ दिया। हर सीजन इसे जीतने की कोशिश की और अपनी सारी ताकत लगा दी। अब जाकर इसे हासिल करना अविसनीय अहसास है। कभी नहीं सोचा था कि यह दिन आएगा। मैं आखिरी गेंद के बाद भावनाओं में बह गया। अपनी सारी ऊर्जा झोंक दी और अब जो महसूस हो रहा, वो बयां करना मुश्किल है। वाकई कमाल का अहसास है।' आरसीबी के विजेता बनने पर एक और तस्वीर देखने को मिली। आरसीबी की सफलताओं में अहम भूमिका निभाने वाले एबी डिविलियर्स टीम के विजेता बनते ही मैदान में दौड़कर आए और विराट को गले लगा लिए। क्रिस गेल भी वहां पहुंच कर विराट को गले लगाकर बधाई देते नजर आए। इसमें कोई दो राय नहीं कि आरसीबी के महान खिलाड़ियों की सूची में विराट का नाम सबसे ऊपर है। पर डिविलियर्स और गेल का नाम विराट के बाद होने में शायद ही किसी को शक हो।

हरकी पैडी में जाम छलकाने की शिकायतों पर पुलिस की कार्यवाही

10 आरोपी दबोचे, पुलिस एक्ट में किया चालान

संवाददाता

हरिद्वार। गंगा घाट हरकी पैडी में जाम छलकाने वाले दस लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर उनका पुलिस एक्ट में चालान किया।

आज यहां रेंज स्तर से चलाए जा रहे ऑपरेशन लगाम के तहत प्रभारी चौकी के नेतृत्व में हरकी पैड़ी पुलिस ने मां गंगा जी के पवित्र घाट पर शराब पीकर हुडदंग मचाने वाले निम्न कुल 10 व्यक्तियों को दबोचा। सभी आरोपियों के विरुद्ध 81 पुलिस एक्ट के अन्तर्गत चालानी कार्रवाई कर संयोजन शुल्क वसूल किया गया तथा भविष्य के लिए चेतावनी दी गई है। पकडे गये लोगों ने अपने नाम चेतन पुत्र वीरेंद्र निवासी लाल कुआं बादलपुर जिला गाजियाबाद, दीपांशु पुत्र वीरेंद्र निवासी उपरोक्त, अक्षय कुमार पुत्र आजाद निवासी मुंडभर थाना भोरा कला मुजफ्फरनगर, सनी पुत्र मुकेश निवासी हड़ौली थाना भोरा कला मुजफ्फरनगर, अंकित कुमार पुत्र दिनेश कुमार निवासी सिसौली थाना भोरा कला मुजफ्फरनगर, राहुल पुत्र मुंगेर निवासी ब्रह्मपुरी थाना कोतवाली नगर जनपद हरिद्वार, रामू पुत्र शक्ति निवासी उपरोक्त,परविंदर पुत्र रूपराम निवासी पीतपुर थाना लक्सर जनपद हरिद्वार, शुभम पुत्र गोनर निवासी शिवलोक कॉलोनी थाना रानीपुर,विकास पुत्र निरपाल निवासी हाथरस बताया।

नगर आयुक्त ने किया सफाई व्यवथा का औचक निरीक्षण, बड़ी कार्रवाई

संवाददाता

देहरादून। नगर आयुक्त नमामि बसंल ने शहर में सफाई व्यवस्था का औचक निरीक्षण कर मुख्य सफाई निरीक्षक का वेतन रोक दिया।

आज यहां नगर आयुक्त, नमामि बंसल द्वारा सुबह शहर के विभिन्न क्षेत्रों शहीद भगत सिंह कॉलोनी, चंदननगर, रायपुर, राजपुर, रेस कोर्स, रिस्पना क्षेत्र, आदि का स्थल निरीक्षण किया गया, जिसमें सड़कों के किनारे मलवा आदि तथा नालियों से निकाले गए कूड़े कुछ स्थान पर पाए गए। संबंधित मुख्य सफाई निरीक्षकों/ सफाई निरीक्षकों को निर्देशित किया गया है कि सड़कों की सफाई के उपरांत एकत्र कूड़े के ढेरों को ट्रैक्टर ट्राली के माध्यम से समयातर्गत उठाया जाये। नाले के सफाई के बाद सिल्ट को सड़क किनारे नहीं छोड़ा जाये। सफाई व्यवस्था को लेकर गंभीरता से कार्य किया जाना है जिसके क्रम में लापरवाही कर रहे तीन मुख्य सफाई निरीक्षकों को कठोर चेतावनी जारी कि गई है तथा एक मुख्य सफाई निरीक्षक का वेतन रोक दिया गया है। नगर आयुक्त द्वारा मुख्य नगर स्वास्थ्य अधिकारी/समस्त मुख्य सफाई निरीक्षक/सफाई निरीक्षकों को निर्देशित किया गया कि वह शहर की सफाई व्यवस्था में सुधार लाएं, भविष्य में इस प्रकार की लापरवाही पाई जाने पर उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए निलंबन तक की करवाई की जाएगी। साथ ही वार्डों में तैनात सफाई नायकों को नियमित क्षेत्रवार सघन पर्यवेक्षण के निर्देश दिए गए हैं। निरीक्षण के दौरान मुख्य नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अविनाश खन्ना आदि उपस्थित रहे।

आखिर डीएम जिले में ले ही आए आधुनिक लांग रेंज इमरजेंसी सायरन

संवाददाता

देहरादून। जिलाधिकारी सविन बसंल ने बताया कि अब देहरादून जिला आधुनिक लांग रेंज इमरजेंसी सायरन से लेस हो रहा है।

आज यहां जिलाधिकारी सविन बंसल द्वारा आपदा एवं आपातकाल स्थिति से जनमानस की सुरक्षा एवं अलर्ट करने के लिए तैयारी एडवांस स्टेज पर हैं अब देहरादून जिला आधुनिक लांग रेंज इमरजेंसी सायरन से लेस हो रहा है। शुरूआती चरण में जिले में 16 किमी एवं 08 किमी रेंज तक सुनवाई देने वाले एडवांस टैक्नॉलाजी वाले 15 सायरन सभी प्रमुख स्थानों पर लगाए जा रहे हैं जिनका आज आपदा कन्ट्रोलरूम में परीक्षण किया गया है। जिलें में पहली बार आर्मी, पैरामिलट्री, एयरपोर्ट, बड़े अस्पताल आदि वायटल इन्सटॉलेशन यूनिट पर जिलाधिकारी की पहल पर रेपिड कम्यूनिकेशन सिस्टम भी लगाये जा रहे हैं, इससे बाहरी आक्रमण एवं अन्य अपातकालीन स्थिति में एक ही समय पर सभी संस्थानों से एक साथ कम्प्यूनिकेशन हो सकेगा। युद्व एवं हवाई हमले जैसी हालात में आम नागरिकों को खतरे की चेतावनी देने और सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए राजधानी देहरादून के सभी प्रमुख स्थानों पर सायरन लगाने का काम शुरू हो गया है। जिलाधिकारी सविन बंसल की मौजूदगी में जिला आपतकालीन परिचालन केंद्र में नए खरीदे गए आधुनिक सायरन का परीक्षण किया गया है। आधुनिक लांग रेज सायरन शुरूआती चरण में घनी आबादी वाले 15 स्थानों यथा थानों पुलिस चौकी में स्थापित किये जा रहे हैं। कई वर्षों बाद डीएम के आह्वान पर जिले में इमरजेंसी कम्यूनिकेशनस; पब्लिक वार्निंग अलर्ट सिस्टम उच्चीकृत किये जा रहे हैं। जिलाधिकारी के निर्देशों पर पहले चरण में देहरादून सिटी के घनी आबादी वाले पुलिस थाना-चौकियों में 08 किलोमीटर और 16 किलोमीटर रेंज के 15 सायरन लगाए जा रहे है। इनका ट्रिगर संबंधित थाना-चौकियों सहित जिला आपातकालीन परिचालन केंद्र में भी रहेगा। शुरूआती चरण में 16 किमी रेंज के 06 तथा 08 किमी रेंज के 09 आधुनिक सायरन स्थापित किये जा रहे हैं, जिससे पूरी देहरादून सिटी में एक साथ सायरन की आवाज सुनाई दे सकेगी। जिलाधिकारी ने कहा कि सायरन लगाने का मकसद आपात स्थिति में आम नागरिकों से तुंरत जुडकर उनको खतरे का चेतावनी संदेश पहुंचाना है। ताकि सायरन की आवाज सुनते ही लोग खुले स्थानों से हटकर सुरक्षित स्थानों पर जा सके। जिलाधिकारी ने कहा कि दूसरे चरण में जनपद के ऋषिकेश, विकासनगर, चकराता एवं अन्य प्रमुख शहरों में भी चेतावनी सायरन स्थापित किए जाएंगे।जिलाधिकारी ने कहा कि सिटी में 1970 दशक के पुराने सायरन लगे थे। देहरादून में उस समय की आबादी के हिसाब से सायरन लगाए गए थे। वर्तमान में देहरादून की घनी आबादी में सभी स्थानों तक सायरन की आवाज पहुंचाने के लिए नए आधुनिक सायरनों की खरीद कर इनका परीक्षण कर लिया गया है। जल्द ही चिन्हित पुलिस थाना-चौकियों में इनकों स्थापित किया जाएगा। जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि सायरनों को उचित स्थानों पर स्थापित किया जाए। सायरन लगे स्थानों पर अवरोधक न हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाए। ताकि सायरन की आवाज आम नागरिकों तक आसानी से पहुंच सके। जिलाधिकारी ने कहा कि नए आधुनिक सायरन से सिविल डिफेंस सिस्टम को सुदृढ़ एवं सशक्त बनाने में मदद मिलेगी और आपात स्थिति में सिविल डिफेंस सिस्टम एक मजबूत स्तंभ की तरह नागरिक सुरक्षा मुहैया करने में कामयाब होगी। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी केके मिश्रा, एसडीएम सदर हरिगिरि, पुलिस क्षेत्राधिकारी अनिल जोशी, आपदा प्रबन्धन अधिकारी रिषभ सहित अधिकारी कार्मिक उपस्थित रहे।

पर्यटकों की भीड़ अपार, कैसे पाए पार

विशेष संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड का धार्मिक पर्यटन अपार संभावनाओं से भरा हुआ है। सिर्फ चार धाम यात्रा ही नहीं वर्ष भर धार्मिक पर्यटन के कारण उत्तराखंड सैलानियों से गुलजार रहता है। पर्यटकों के जन सैलाब को संभाल पाना अब शासन-प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है।

उत्तराखंड राज्य की कुल जनसंख्या सवा करोड़ के आसपास है जबकि साल भर में यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या 5 करोड़ तक जा पहुंचती है। जो इस राज्य की आबादी से चार गुना अधिक है। सैलानियों की इस भारी भीड़ को नियंत्रित करना ही एक बड़ी चुनौती नहीं है इन्हें मूलभूत सुविधाएं मुहिया कराने के साथ-साथ उनके जान माल की सुरक्षा तथा आवागमन की बेहतर सुविधाएं प्रदान करना शासन प्रशासन की जिम्मेदारी है।

राज्य में चार धाम यात्रा को शुरू हुए अभी 42 दिन का समय ही हुआ है केदारनाथ धाम में अब तक 10 लाख से अधिक श्रद्धालु पहुंच चुके हैं वहीं बद्रीनाथ में लगभग 8 लाख, गंगोत्री व यमुनोत्री धामों में चार-चार लाख के करीब श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं। यह श्रद्धा का सैलाब मौसम की विसंगतियां व आवागमन की दिक्कतों के बावजूद भी थम नहीं रहा है। जगह-जगह सड़कों के बंद होने और लंबे-लंबे जाम का झेलने के बाद भी रिकॉर्ड भीड़ उमड़ रही है जिसके कारण हर साल नये रिकॉर्ड बन रहे हैं।

सड़कों पर जाम, प्रशासन के फूले हाथ-पांव,हर साल भीड़ के आगे छोटे पड़ रहे हैं इंतजाम

15 जून को हल्द्वानी के कैंची धाम की स्थापना दिवस पर लगने वाले मेले में आने वाली भीड़ ने प्रशासन के हाथ पैर फुला दिए हैं। भवाली से आगे वाहनों के आवा गमन पर रोक लगा दी गई है तथा लोगों को शटल सेवा के जरिए कैंची धाम तक पहुंचाने की व्यवस्था की गई है लेकिन भीड़ के कारण भारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बात सिर्फ चार धाम की यात्रा या फिर कुछ खास स्थान पर आने वाले पर्यटकों तक सीमित नहीं है मसूरी और फूलों की घाटी से लेकर अन्य तमाम दर्शनीय स्थलों तक भीड़ का बोलबाला है। कभी कावड़ यात्रा तो कभी कुंभ का मेला प्रदेश में पर्यटकों का हर वक्त तथा हर सीजन में भारी जमावड़ा रहता है जो अब शासन प्रशासन के लिए चुनौती बनता जा रहा है।

बस की चपेट में आकर स्कूटी सवार घायल

संवाददाता

देहरादून। बस की चपेट में आकर स्कूटी सवार के घायल होने पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार छिददरवाला निवासी जक बहादुर गुरूंग ने रायवाला थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसके पिता अपनी स्कूटी से घर की तरफ आ रहे थे। जब वह नेपाली फार्म के पास पहुंचे तभी पीछे से आ रही बस ने उनको अपनी चपेट में ले लिया जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गये। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

- भूमाफिया का जंगल में कब्जे का मामला -

ग्रामीणों ने भूमाफिया का कब्जा हटाया

हमारे संवाददाता

देहरादून। राजधानी देहरादून में भूमाफियाओं के हौंसले कितने बुलंद हो चुके है इसकी बानगी नालापानी क्षेत्र के जंगल में सामने आयी है। यहां भूमाफिया द्वारा जगंल के बीचोबीच निर्माण कार्य शुरू करा दिया गया हालांकि मामले की जानकारी मिलने के बाद ग्रामीणों ने वन विभाग व पुलिस की मौजूदगी में अवैध रूप से हुए इस कब्जे को हटा दिया गया। ग्रामीणों की मांग है कि क्षेत्र के डीएफओ, रेंजर व फारेस्ट गार्ड की मांमले में मिली भगत है इसलिए उनको संस्पेड किया जाये।

बता दें कि नालापानी क्षेत्र के खंलगा मार्ग पर हल्दूआम के पास जंगल में 40 बीघा जमीन पर भूमाफिया द्वारा कैंप लगाने की तैयारी शुरू कर दी गयी थी। जबकि मामले में वन विभाग बेखबर था। मामले की जानकारी जब ग्रामीणो को हुई तो उन्होने इसका विरोध करना शुरू कर दिया और वन विभाग को इसकी सूचना दी।

❑डीएफओ, रेंजर व फारेस्टर को सस्पेंड करने की मांग

सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और उसने कोई कार्यवाही नहीं की। इस बात से गुस्साये ग्रामीण आज सुबह एकत्र हुए और उन्होने वन विभाग के खिलाफ नारेबाजी करते हुए कब्जे वाली जगह पर धावा बोल दिया।

मामले की जानकारी मिलने पर वन विभाग और पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंची और उन्होने ग्रामीणों को समझाया। लेकिन ग्रामीणों ने उनकी एक न सुनते हुए सारे अवैध अतिक्रमण को धराशाही कर के ही दम लिया। मामले में जब रायपुर पुलिस से जानकारी ली गयी तो पुलिस का कहना था कि अभी किसी की तरफ से कोई शिकायत नही ं की गयी है शिकायत मिलने पर कार्यवाही की जायेगी। वहीं ग्रामीणो का कहना है कि इस मामले में वन विभाग के लोगों की मिली भगत है इसलिए डीएफओ, रेंजर व फारेस्टर को संस्पेड किया जाये।

मगरमच्छ ने किया ग्रामीण पर हमला

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। हरिद्वार के गंगा किनारे बसे एक गांव में मगरमच्छ ने ग्रामीण पर हमला कर दिया। गम्भीर रूप से घायल ग्रामीण को अस्पताल पहुंचाया गया। जहां से उसे प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रैफर कर दिया गया है।

जानकारी के अनुसार लक्सर तहसील क्षेत्र के डूंगरपुर गांव निवासी ईश्वर चंद और जोगिंद्र ने बताया कि उनके गांव में रहने वाले सुरेश का घर तालाब के पास स्थित है। आज सुबह वो किसी काम से तालाब के पास पहुंचे। तभी तालाब से निकले एक मगरमच्छ ने उन पर हमला कर दिया। मगरमच्छ ने सुरेश का हाथ अपने जबड़े में दबा लिया। लेकिन हिम्मत करके जैसे तैसे सुरेश ने मगरमच्छ से हाथ छुड़ाया। चीख पुकार सुनकर अन्य

ग्रामीण भी मौके पर पहुंचे तो मगरमच्छ फिर से तालाब में भाग गया। मगरमच्छ के हमले में ग्रामीण के हाथ की खाल तक उतर गई और नसें तक कट गई हैं। इसके बाद एम्बुलेंस बुलाकर उन्हें इलाज के हरिद्वार के जिला अस्पताल भेजा गया। ग्रामीणों ने बताया कि पूर्व में भी उनके गांव में कई मगरमच्छ पकड़े जा चुके हैं। इस बार भी तालाब में मगरमच्छ इकट्ठा हो गए हैं। लिहाजा वो प्रशासन से मांग करते हैं कि तालाब कि सफाई कराई जाए और मगरमच्छ को पकड़कर कहीं दूर छोड़ा जाए। रेंज अधिकारी शैलेंद्र सिंह नेगी ने बताया कि मगरमच्छ के हमले की सूचना मिलते ही टीम मौके पर भेजी गई है। जल्द ही मगरमच्छ को पकड़कर कहीं दूर सुरक्षित स्थान पर छोड़ा जाएगा।

मणिपुर में बरामद हुआ हथियारों का जखीरा

इंफाल (कासं)। मणिपुर में मणिपुर पुलिस, सीएपीएफ, सेना और असम राइफल्स के संयुक्त अभियान के दौरान बड़ी सफलता मिली है। घाटी के 5 जिलों के बाहरी इलाकों से हथियारों का जखीरा बरामद हुआ है। मणिपुर पुलिस के एडीजीपी लहरी दोरजी ल्हाटू ने कहा, मणिपुर पुलिस, सीएपीएफ, सेना और असम राइफल्स की संयुक्त टीमों द्वारा 13-14 जून की मध्य रात्रि में घाटी के 5 जिलों के बाहरी इलाकों में तलाशी अभियान चलाया गया था। इस दौरान बड़ी संख्या में विस्फोटक और अन्य युद्ध सामग्री बरामद की गई। उन्होंने बताया, 151 एसएलआर राइफल, 65 इंसास राइफल, 73 अन्य प्रकार की राइफल, 5 कार्बाइन गन, 2 एमपी-5 गन और अन्य युद्ध सामग्री बरामद की गई है। बरामद की गई कुल बंदूकें और राइफलों की संख्या 328 है। ये खुफिया-आधारित ऑपरेशन मणिपुर पुलिस और सुरक्षा बलों के लिए सामान्य स्थिति बहाल करने, सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने और नागरिकों और उनकी संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उनके निरंतर प्रयासों में एक बड़ी उपलब्धि है।

तेल अवीव पर ईरान ने की मिसाइलों से भारी बमबारी

कार्यालय संवाददाता

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया एक बार फिर युद्ध के मुहाने पर खड़ा है। शुक्रवार, 13 जून की रात इजरायल की राजधानी तेल अवीव समेत कई इलाकों पर ईरान ने बैलिस्टिक मिसाइलों की भारी बमबारी की गई। ईरान ने इस कार्रवाई कहा और इसे ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस 3 नाम दिया है। यह जवाबी हमला इजरायल द्वारा चलाए गए ऑपरेशन राइजिंग लायन के जवाब में किया गया, जिसमें ईरान के कई उच्चस्तरीय सैन्य व वैज्ञानिक अधिकारियों की मौत हुई थी।

ईरानी सैन्य संगठन इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स ने बयान जारी

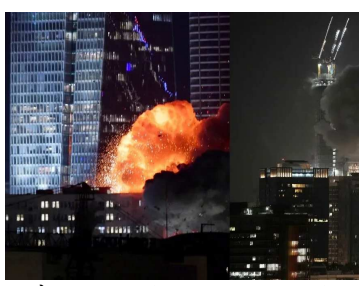

करते हुए कहा कि इजरायल द्वारा किए गए हमलों के जवाब में क्रशिंग और सटीक हमला किया गया है। ईरान ने कहा कि इजरायल ने जो बच्चों का हत्यारा और आतंकी कृत्यष किया था, उसके खिलाफ यह कार्यवाही ईश्वर की शक्ति, सर्वोच्च नेता के मार्गदर्शन और ईरानी राष्ट्र के एकजुट समर्थन से की गई। ईरान का यह बदला उस इजरायली हमले के जवाब में आया है जिसमें ईरान की राजधानी तेहरान में की गई बमबारी में आईआरजीसी के प्रमुख होसैन सलामी, सशस्त्र बलों के प्रमुख जनरल मोहम्मद बाघेरी सहित कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों की मौत हो गई थी। यह हमला शुक्रवार तड़के किया गया था और इसे श्ऑपरेशन राइजिंग लायनश नाम दिया गया। ईरानी मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इजरायली हमले में कई वैज्ञानिक, वरिष्ठ सैन्य अधिकारी और आम नागरिक-जिनमें बच्चे भी शामिल हैं, मारे गए। इस शहीदी के बाद ईरान में आक्रोश फैल गया और तुरंत ही जवाबी कार्रवाई की योजना बनाई गई। ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्ला अली खामेनेई ने इजरायल को चेतावनी देते हुए कहा, ष्इस्लामी गणराज्य की सशस्त्र सेनाओं का शक्तिशाली हाथ इस हमले को यूं ही नहीं जाने देगा। हम इसका कड़ा बदला लेंगे। इस बयान के कुछ ही घंटों बाद ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस 3 शुरू कर दिया गया। आईआरजीसी ने कहा है कि ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस 3 की पूरी जानकारी जल्द ही ईरानी जनता को दी जाएगी। दूसरी ओर, इजरायल ने भी संकेत दिए हैं कि यह अंत नहीं है और उनकी ओर से जवाबी कार्रवाई की संभावना बरकरार है। इस पूरे घटनाक्रम ने वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए गंभीर चिंता पैदा कर दी है। यदि दोनों देशों ने पीछे हटने की बजाय आक्रामक रुख अपनाया, तो यह संघर्ष पूरी दुनिया को प्रभावित कर सकता है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।